फरीदाबाद
मजदूर समाचार

राहें तलाशने-बनाने के लिए मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 236 1/- फरवरी 2008

क्या ज्ञान चाहिये ? क्या ऊँच-नीच के पक्ष वाले ज्ञान चाहियें ? क्या आज का हावी ज्ञान चाहिये ? कौनसा और कितना ज्ञान चाहिये ?

दोस्तों के नाम एक खत

मजदूर समाचार में आ रही अधिकतर मजदूरों की बातें मजदूर पहचान के इर्द-गिर्द हो रही हैं। तनखा, पी.एफ., ई.एस.आई., काम के घण्टे, कार्यस्थलों की हालात मजदूरों की बातों में मुख्य तौर पर हैं। लगता है कि अच्छे अथवा बुरे जीवन को आँकने के यही पैमाने हैं। ऐसे में बेहतरी-बदलाव के प्रयासों का इन्हीं की दिशा में धकेले जाने का खतरा है।

मित्रो, मेरे विचार से, हमें ऐसी बातचीत बढानी चाहियें जिनमें "जीवन क्या है ? अच्छा जीवन कैसा हो ?" जैसे प्रश्न भी हों। बुनियादी बदलाव की बातें हमारी रोज़ाना की सोच का हिस्सा बनें तभी बात बनेगी।

गहरे और व्यापक रिश्तों वाला जीवन अच्छा जीवन है। जबकि, क्षणिक-सतही-छिछले सम्बन्धों वाला जीवन बुरा-खराब जीवन है।

विस्फोटक हो सकता है हम में से प्रत्येक द्वारा खुद से सवाल पूछना :

– स्वयं के साथ कभी बैठ पाते हैं क्या ? खुद के लिये समय का अकाल और स्थान का अभाव तो नहीं है ? या फिर, खाली दिमाग शैतान का घर मान कर अकेले बैठने से परहेज करते हैं और इसे फालतू समझते हैं। मेरे विचार से, अधिक चिन्ता की बात स्वयं के जीवन पर चिन्तन-मनन करने से इनकार करना है : " दिमाग खराब हो जाता है। सोचना ही नहीं है !"

– स्वयं के जीवन को महत्वहीन तो नहीं मानते ? या, सिर्फ खुद को ही तो सबकुछ नहीं मानते ? मेरे विचार से, न कोई शून्य है और न कोई पूर्ण है। इन अतियों के फेर में हर व्यक्ति सिकुड़ जाता-जाती है। इन अतियों से पैदा होने वाले दुख, खुशी, तनाव बेमतलब के हैं। हर व्यक्ति का महत्व है और अपने महत्व से आरम्भ करके ही हम दुख-दर्द मिटा कर वास्तविक खुशी की रचना कर सकते हैं।

अपने स्वयं से सवाल करने जितना ही महत्वपूर्ण है औरों से सम्बन्धों के बारे में विचार करना।

– "रिश्ते अब हैं ही कहाँ ? कोई किसी का नहीं होता !" यह बातें इतनी सामान्य हो गई हैं कि फिकरे बन गई हैं। क्या ऐसे लोग हैं जिन से हमारे अच्छे, गहरे सम्बन्ध हैं ? संग रह रहे लोगों, सहकर्मियों, पड़ोसियों, रिश्तेदारों, दोस्तों के लिये हमारे पास समय है क्या ? ऊर्जा है क्या ? मन है क्या ? विचारणीय बात हैं। मेरे विचार से, निकट भविष्य के लिये ही नहीं बल्कि अपने आज को बेहतर बनाने के लिये भी सम्पर्क में रहते लोगों के साथ अच्छे-गहरे सम्बन्ध बनाने के प्रयास करना बनता है।

– मित्र/दोस्त/सहेली इस घुटन भरे माहौल में ताजा हवा के झौंके हैं। बनते हैं, बनाने और बनाये रखने की जरूरत है। दोस्ती डिगा देती है लाभ-हानि की दीवारें। अजनबी और दोस्त दो छोर नहीं हैं। कितनी बार होता है कि कल जो अजनबी थे वे आज हमारे गहरे दोस्त हैं। माहौल आज अनजान लोगों से डरने का बनाया जा रहा है, अजनबी को लाभ-हानि के खाँचे में फिट नहीं कर पाना भी एक बाधा है। क्या अनजान-अजनबी से अच्छा व्यवहार नहीं करना अथवा उन्हें अनदेखा करना हमारे द्वारा अपने ताजा हवा के झरोखों को पाटना नहीं है ?

आज बेशक इच्छा से नहीं बल्कि जबरन हम बाँधे गये हैं पूरी दुनियाँ से। हालात ऐसे हो गये हैं कि कुछ ऐसीं ही बातें ब्याह-शादी, बच्चों, वृद्धों के सन्दर्भ में हो गई हैं। ऐसे में प्यार-मोहब्बत के बारे में सोचने की जरूरत तो है ही, नई दुनियाँ के लिये इस दुनियाँ के बारे में भी सोचने-विचारने की जरूरत है।

दोस्तो, "समय बलवान है, काल से कौन बचा है" की बातें अपनी जगह, पर विचारणीय बात यह है कि घड़ी ने हमें कहाँ ला पटका है। कैसे हैं आज हमारे समय से रिश्ते ? हर समय भागमभाग लगी रहती है ! आराम करना किसे अच्छा नहीं लगता ? क्या आपको आराम करने का समय मिलता है ? क्या आप सिर के बल खड़े हो कर आराम को हराम तो नहीं मानते ?

थोड़ा ठहर कर देखते हैं तो : कितना कुछ खो रहे हैं हम जीवन में ! धूल-धुँआ-गर्द व फ्लैट-खोखे एक तो चाँद-सितारों को यों ही ओझल कर रहे हैं, और फिर, किसे फुर्सत है तारों को निहारने की। मर-सी गई है रात की नीरवता। जानवरों और पेड़-पौधों को गमलों में रखना तो बहुत दुखद है ही, और भी तकलीफ की बात इनका हमारे दैनिक जीवन से गायब होते जाना है। क्या घूमने-फिरने को समय मिलता है? क्या आस-पास घूमने के लिये जगह है ? कहीं घूमने की इच्छा ही तो नहीं मर गई है ?

दोस्तो, रुपया-पैसा आज हमारी एक मजबूरी तो है, पर मुझे लगता है कि हम सब रुपये के फ़ेर में अपना पूरा जीवन ही लगाये जा रहे हैं। रुपये कमाने-रुपये बचाने-रुपये खर्च करने में तो हम बहुत समय लगाते ही हैं, रुपये-पैसे के बारे में सोचते रहने में भी हम बहुत समय खर्च करते हैं।

अन्त में, मैं तो यही कहूँगा कि तनखा और काम के घण्टों के दायरे से बाहर के बारे में विचार करना और कदम उठाना नये जीवन के लिये जरूरी हैं। –अमित

कामगार

– कारखाना अधिनियम 1948 के अनुसार प्रत्येक कारखाने में काम कर रहे हर मजदूर को पे-स्लिप, फण्ड स्लिप, ई.एस.आई. कार्ड, उपस्थिति कार्ड मिलने चाहियें परन्तु गाजियाबाद में अधिकतर औद्योगिक संस्थानों में इन में से एक भी नहीं दी जाती।

– दिल्ली में सरकार के गुरु तेग बहादुर अस्पताल में कार्यरत 144 सफाईकर्मियों की पी. एफ. नहीं। ✱ दिल्ली सरकार द्वारा 1985 में डी. टी. सी. में भर्ती किये 1685 संवाहक जनवरी 2008 में भी अस्थाई। ✱ दिल्ली में चौराहों और लाल बत्तियों पर पुलिस की जगह ठेकेदारों के जरिये रखे मजदूरों द्वारा यातायात नियन्त्रण – रोज 12 घण्टे ड्युटी, साप्ताहिक अवकाश नहीं, महीने के 3000 रुपये। ✱ रोजगार की तलाश में राजधानी आने वाले लोगों का है बुरा हाल, मुश्किल हुआ पेट भरना, जीना मुहाल।

– गुड़गाँव औद्योगिक शहर में दूर-दूर से कामकाज के लिये आते लोगों को लगता है कि ज्यादा से ज्यादा मेहनत कर वे आर्थिक रूप से अपने पाँव पर खड़े हो जायेंगे। लेकिन यह जान कर हैरानी होगी कि **(बाकी पेज तीन पर)**

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद – 121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

कानून हैं शोषण के लिये
छूट है कानून से परे शोषण की

कानून : ●37-40 दिन काम करने पर 30 दिन की तनखा, अगले महीने की 7-10 तारीख तक दे ही देना; ●8 घण्टे की ड्युटी, तीन महीने में 50 घण्टे से ज्यादा ओवर टाइम काम नहीं, ओवर टाइम का भुगतान वेतन की दुगुनी दर से; ● *प्रतिदिन 8 घण्टे काम और सप्ताह में एक दिन की छुट्टी पर 01.07.2007 से हरियाणा सरकार द्वारा निर्धारित कम से कम तनखा प्रतिमाह इस प्रकार हैं: अकुशल मजदूर (हैल्पर) 3510 रुपये (8 घण्टे के 135 रुपये); अर्धकुशल अ 3640 रुपये (8 घण्टे के 140 रुपये); अर्धकुशल ब 3770 रुपये (8 घण्टे के 145 रुपये); कुशल श्रमिक अ 3900 रुपये (8 घण्टे के 150 रुपये); कुशल श्रमिक ब 4030 रुपये (8 घण्टे के 155 रुपये); उच्च कुशल मजदूर 4160 रुपये (8 घण्टे के 160रुपये) । सामान्य स्टाफ में दसवीं से कम 3640 रुपये; 14वीं से कम 3900 रुपये; स्नातक 4160 रुपये; हलका वाहन चालक 3900 रुपये; भारी वाहन चालक 4160 रुपये; सुरक्षा गार्ड बिना हथियार 3640 रुपये ।*

नरायण डाइंग-साँई टैक्स प्रिन्ट मजदूर: "प्लाट 4 सैक्टर-27 सी स्थित इन कम्पनियों में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं । नरायण डाइंग में 12 घण्टे पर तीस दिन के 3510 रुपये देते हैं पर कागजों में 8 घण्टे पर 26 दिन के 3510 दिखाते हैं । साँई टैक्स प्रिन्ट में 12 घण्टे पर 26 दिन के हैल्परों को 2500 और कारीगरों को 3200-4000 रुपये देते हैं । नरायण में ई.एस.आई. व पी.एफ. हैं पर साँई में यह नहीं हैं । साँई में डायरेक्टर गाली देते हैं और 12 घण्टे में एक चाय तथा लगातार 36 घण्टे रोकने पर रोटी के लिये 46 रुपये देते हैं । नरायण में चाय नहीं देते और 36 घण्टे की ड्युटी में रोटी के लिये 20 रुपये देते हैं । नरायण और साँई, दोनों कम्पनियों ने दिसम्बर की तनखा आज 16 जनवरी तक नहीं दी है ।"

एस.एन.जी. वरकर : "प्लॉट 44 सैक्टर-4 स्थित फैक्ट्री में 8 की बजाय 9 घण्टे ड्युटी पर महीने के 3510 रुपये देते हैं ।"

मिनटैक्स ऑटो मजदूर : "प्लॉट 10-11 ई संजय कॉलोनी, सैक्टर-23 स्थित फैक्ट्री में 12 घण्टे की एक शिफ्ट है । ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से । हैल्परों की तनखा 2600-2700 और ऑपरेटरों की 3000-3200 रुपये । फैक्ट्री में 60 मजदूर काम करते हैं पर ई.एस.आई. व पी. एफ. 15 के ही हैं ।"

सीट्ज टैक्नोलोजीज वरकर : "प्लॉट 38 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में स्थाई मजदूरों की 8 घण्टे की ड्युटी है पर दो ठेकेदारों के जरिये रखे हम वरकरों की 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं । ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से । हम में हैल्परों की तनखा 3510 रुपये है पर बहुत देरी से देते हैं – नवम्बर का वेतन 29 दिसम्बर को जा कर दिया था और दिसम्बर की तनखा आज 19 जनवरी तक नहीं दी है ।"

मेहरा मैटल मजदूर : "प्लॉट 108 सैक्टर-59 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2300 और ऑपरेटरों की 2800-3000 रुपये है । एक शिफ्ट है 12 घण्टे की – ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से । डेढ सौ में 25 स्थाई मजदूर हैं । पावर प्रेसों पर हाथ कटते रहते हैं ।"

अल्पिया पैरामाउन्ट वरकर : " प्लॉट 60 सैक्टर-25 स्थित फैक्ट्री में काम करते 500 मजदूरों में 400 की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं । जिस दिन किसी सरकारी अधिकारी ने फैक्ट्री आना होता है उस दिन बिना ई.एस.आई. व पी.एफ. वाले मजदूरों की छुट्टी कर देते हैं । सौ मजदूरों को 3510-3640 रुपये तनखा और ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से भी कम, 2500 रुपये वेतन अनुसार । चार सौ मजदूरों में हैल्परों की तनखा 2200 और ऑपरेटरों की 3000 रुपये – ओवर टाइम दोनों को 2200 रुपये वेतन अनुसार सिंगल रेट से ।"

जगसन पॉल फार्मास्युटिकल्स मजदूर : "12/4 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में शनिवार व रविवार की छुट्टी के कारण जिन 100 वरकरों की ई.एस.आई. व पी.एफ. नहीं हैं उनकी 8 छुट्टी काट कर दिहाड़ी 64 रुपये है । मैनेजर सब मजदूरों को गाली देता है ।"

कास्टमास्टर वरकर : "प्लॉट 46 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं । ओवर टाइम का भुगतान सिंगल दर से । ई.एस. आई. व पी.एफ. की राशि के तौर पर हरेक के वेतन से 450 रुपये काटते हैं जबकि हैल्परों की तनखा 2554 और ऑपरेटरों की 3500 रुपये है ।"

डिलाइट प्रेसिंग मजदूर : "प्लॉट 302 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में साप्ताहिक छुट्टी नहीं है । हैल्परों को 8 घण्टे रोज पर 30 दिन के 2400 तथा ऑपरेटरों को 2800 रुपये देते हैं । रोज ही 2-4-6 घण्टे ओवर टाइम पर रोक लेते हैं, पैसे सिंगल रेट से । ड्युटी 12 घण्टे से ज्यादा होने पर 15 रुपये रोटी के देते हैं । **एस्कोर्ट्स** तथा **जे सी बी** का काम होता है । पावर प्रेसें हैं, हाथ कटते रहते हैं । ई.एस..आई. व पी.एफ. 70 मजदूरों में 35 के ही हैं ।"

मल्टीटेक प्रोडक्ट्स वरकर : "प्लॉट 4 नोरदर्न कम्पलेक्स, 20/3 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में कम्पनी द्वारा स्वयं भर्ती हैल्परों की तनखा 2500 तथा ऑपरेटरों की 3000 रुपये । ठेकेदारों के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 2200 तथा ऑपरेटरों की 2800 रुपये । दो शिफ्ट हैं 12-12 घण्टे की । ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से । ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं ।"

एस पी एल इन्डस्ट्रीज मजदूर : "प्लॉट 21 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री के पैकिंग विभाग में ठेकेदार के जरिये रखे हम 40 वरकरों को दिसम्बर की तनखा आज 19 जनवरी तक नहीं दी है । हमें लगाया भी है महीने के तीसों दिन रोज 12 घण्टे काम के बदले में 4000 रुपये पर ।"

डी.पी. ऑटो वरकर : "प्लॉट 238 सैक्टर-24 स्थित फैक्ट्री में ठेकेदार के जरिये रखे हैल्परों की तनखा 2200 तथा ऑपरेटरों की 3000 रुपये । दो शिफ्ट हैं 12-12 घण्टे की । ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से । ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं ।"

शिवालिक ग्लोबल मजदूर : "12/6 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री अभी चल रही है और यहाँ 12 घण्टे रोज पर 26 दिन के 3510 रुपये दे रहे हैं । दिसम्बर की तनखा आज 16 जनवरी तक नहीं दी है ।"

प्रभा उद्योग वरकर : "प्लॉट 43 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2200 और कारीगरों की 2600 रुपये । साहब बहुत गाली देता है ।"

हरियाणा स्टैम्पिंग वरकर : "प्लॉट 79 सैक्टर-6 स्थित फैक्ट्री में हैल्परों की तनखा 2000-2200 और ऑपरेटरों की 2400-2600 रुपये ।"

एक छोटा-सा कदम : अगर आपको ऊपर दर्शाये न्यूनतम वेतन नहीं दिये जा रहे तो कम्पनी-फैक्ट्री-कार्यस्थल का पता देते हुये इन साहबों को 25-50 पैसे के पोस्ट कार्ड भेजें:

1. श्रीमान उप श्रम आयुक्त
पुराना ए डी सी दफ्तर, सैक्टर-15ए
फरीदाबाद – 121007
2. श्रीमान श्रम आयुक्त, हरियाणा सरकार
30 वेज बिल्डिंग, सैक्टर-17, चण्डीगढ
3. श्रीमान श्रम मन्त्री,
हरियाणा सचिवालय
चण्डीगढ
4. श्रीमान मुख्य मन्त्री,
हरियाणा सचिवालय, चण्डीगढ

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये :

✶अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये । नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते । ✶ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है । दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये । ✶ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं । सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं । रुपये--पैसे की दिक्कत है ।

महीने में एक बार छापते हैं, 7000 प्रतियाँ फ्री बाँटने का प्रयास करते हैं । मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें, अन्यथा भी चर्चाओं के लिए समय निकालें ।

आज जीवन

जीवन आँकड़ा नहीं होता
लाल किले की प्राचीर से निकलने वाली
दूध की नदियाँ
संसद के आसन से उड़ाई जाने वाली
सोने की चिड़िया
और विदेशी विनिवेश की तरह
तुनुकमिजाज नहीं होता जीवन
जीवन
भदेया धान का कदबा कर लौट रहे
बैल की तरह होता है
कीचड़ से सनी लंगोटी
बाजार के नित चढ़ते तेवर से
सिकुड़ती रोटी
और मध्य वर्ग के अतृप्त मन
की तरह होता जीवन
सरकार की पगडी के नीचे के
रंगीन चश्मे से
नहीं देखा जा सकता जीवन को
जीवन मुद्राकोष का भंडार नहीं होता
नहीं होता जीवन
प्रधानमंत्री का राहत कोष
रेलमंत्री का अफसोस
और
गिरगिटिया नेता की मुआवजा मांग भी
नहीं होता जीवन
जीवन
भिड़ की तरह होता है
जहाँ पेट के भूगोल और
आदमी की जेब के अर्थशास्त्र का
नित रचा जाता है इतिहास।

— कला कौशल, बरौनी

{भिड़ = युद्ध या संघर्ष}

अगस्त 2007 से ***दिल्ली में*** *सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम वेतन इस प्रकार हैं: 8 घण्टे की ड्युटी और सप्ताह में एक छुट्टी पर महीने के अकुशल श्रमिक (हैल्पर) को 3516 रुपये (8 घण्टे के 135 रुपये 22 पैसे); अर्ध-कुशल मजदूर की कम से कम तनखा 3682 रुपये (8 घण्टे के 141 रुपये 62 पैसे); कुशल श्रमिक का कम से कम वेतन 3940 रुपये (8 घण्टे के 151 रुपये 52 पैसे)। स्टाफ में अब कम से कम तनखा मैट्रिक से कम की 3707 रुपये; मैट्रिक पास परन्तु स्नातक से कम की 3964 रुपये; स्नातक एवं अधिक की 4276 रुपये।*

अगर आपको ऊपर दर्शाये न्यूनतम वेतन नहीं दिये जा रहे तो शिकायत के लिये दो पते हैं।

1. श्रम आयुक्त दिल्ली सरकार
   5 शामनाथ मार्ग,
   दिल्ली—110054
2. उप श्रमायुक्त (दक्षिण दिल्ली)
   122-123 ए-विंग पहली मंजिल,
   पुष्प भवन, पुष्प विहार, नई दिल्ली।

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी फरीदाबाद – 121001

गुड़गाँव से ...... (पेज चार का शेष)

5-7 प्रतिशत की ई.एस.आई. व पी.एफ.।"

कन्डोर वरकर : "प्लॉट 792 उद्योग विहार फेज-5 स्थित फैक्ट्री में 12 घण्टे की एक शिफ्ट है। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।"

अरविन्द फैशन आयरन गोला मजदूर: "प्लॉट 60 उद्योग विहार फेज-1 में पहुँचने में एक मिनट की देरी बरदाश्त नहीं करते पर ड्युटी समाप्त होने के बाद डेढ घण्टा रोक लेते हैं जिसके कोई पैसे नहीं देते। तनखा 2400 रुपये। दिसम्बर का वेतन आज 18 जनवरी तक नहीं दिया है।" **इन स्टाइल वरकर** : "प्लॉट 378 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में रोज सुबह 9 से रात पौने दस तक की ड्युटी तो है ही, सप्ताह में 2-3 बार रात पौने एक तक रोकते हैं — तब रोटी के 20 रुपये देते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। महिला मजदूरों को भी जबरन रोकते हैं, बदतमीजी करते हैं। साहब गाली देता है। कम्पनी ने स्टाफ के दो लोगों को ही ठेकेदार बना रखा है और धागा काटने वाले मजदूरों की तनखा 2400 रुपये।"

ऋचा मजदूर : "प्लॉट 239 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में दिसम्बर की तनखा 16 जनवरी को दी तब फिर धुलाई और धागा काटने वाले हम मजदूरों को 2700 रुपये ही दी। हम 78 को ठेकेदारों के जरिये रखा है और हमारी ई.एस. आई. व पी.एफ. भी नहीं हैं। इधर काम कम है इसलिये रोज 2 घण्टे ही ओवर टाइम है जिसके पैसे सिंगल रेट से देते हैं।"

क्लासिक डायल वरकर : "प्लॉट 367 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में सुबह 8½ से साँय 7 की शिफ्ट है। हैल्परों की तनखा 2000 और ऑपरेटरों की 2700-3000 रुपये। ई.एस. आई. व पी.एफ. 200 मजदूरों में 40 के ही।"

मोडलामा एक्सपोर्ट मजदूर : "प्लॉट 201 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 8½ से साँय 7¼ की ड्युटी बताते हैं पर रोकते रात 9-10 बजे तक हैं। सवा सात के बाद के समय को ओवर टाइम कहते हैं और उसके पैसे भी सिंगल रेट से देते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे पहले दिन से काटते हैं पर इन्हें 7-8 महीने बाद लागू करते हैं।" **एस एण्ड आर एक्सपोर्ट वरकर** : "प्लॉट 298 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9 से रात 8 तक काम के लिये हैल्परों को महीने के 3510 रुपये देते हैं। फिर रात 8 से रात 12 बजे तक काम को 3 घण्टे ओवर टाइम कहते हैं और इनका भुगतान भी सिंगल रेट से। रोटी के लिये 20 रुपये देते हैं। यहाँ सजावटी चीजें बनती हैं।" **ज्योति एपरेल्स मजदूर** : "प्लॉट 159 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में सुबह 9¼ से रात तक 9 तक ड्युटी तो रोज है ही, सप्ताह में 5 दिन रात 2 बजे तक काम करना पड़ता है। जबरन रोकते हैं, नहीं रुको तो नौकरी से जाओ। साहब गाली देते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से।" **वी एण्ड एस वरकर** : "प्लॉट 301 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में दिसम्बर की तनखा आज 18 जनवरी तक नहीं दी है। वर्षों से लगातार काम कर रहों को कैजुअल वरकर कहते हैं। नब्बे प्रतिशत मजदूरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं।" **कृष्णा लेबल मजदूर** : "प्लॉट 162 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 8 की बजाय 9½ घण्टे रोज पर महीने के 3510-3640 रुपये देते हैं। तीन घण्टे और रोकते हैं पर 2½ घण्टे को ओवर टाइम कहते हैं और इनके पैसे भी सिंगल रेट से। गड़बड़ कर 12 महीने में 8 महीने का पी.एफ. ही जमा करते हैं। साहब गाली देते हैं।" **भोरजी सुपरटैक वरकर** : "प्लॉट 272 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में 12-12 घण्टे की दो शिफ्ट हैं। स्थाई मजदूरों को ओवर टाइम के पैसे डेढ की दर से और कैजुअल वरकरों को सिंगल रेट से। कैजुअलों में हैल्परों की तनखा 2400 रुपये।" **स्टैन्डर्ड गोल्ड मजदूर:** "प्लॉट 235 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में इलेक्ट्रोनिक्स आइटम बनाते हैल्परों की तनखा 2350 और कारीगरों की 3000-3500 रुपये। सौ से ज्यादा मजदूर हैं पर ई.एस.आई. व पी.एफ. 30 के ही हैं।" **फ्लोलिन्क,** 141 फेज-1, हैल्पर तनखा 2600 रुपये, ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं, ड्युटी 12 घण्टे, ओवर टाइम सिंगल रेट से; **नाम पता नहीं,** 458 फेज-3, दिसम्बर की तनखा 18 जनवरी तक नहीं, 12 घण्टे की शिफ्ट में **एयरटेल** के बोर्ड बनते हैं, ठेकेदार के जरिये रखों को रोज 12 घण्टे पर 26 दिन के 3510 रुपये; **मोहन क्लोथिंग,** 76 फेज-1, रोज 9½ घण्टे पर 26 दिन के 3510-3640 रुपये ठेकेदारों के जरिये रखे 1200 वरकरों।

कामगार .... (पेज एक का शेष)

महीने में एक हजार रुपये बचाना भी मुश्किल होता है। साधारण कमरे का किराया 1200-1500 रुपये..... अर्जुन नगर, कृष्णा कॉलोनी, राजीव नगर, सदर बाजार के पास, सोहना चौक के पास ऐसे सैंकड़ों थोड़े बड़े कमरे हैं जहाँ एक-एक कमरे में 20-25 मजदूर एक साथ रहते हैं।

—ग्रेटर नोएडा प्राधिकरण खुद ठेकेदारी प्रथा को बढावा दे रहा है। स्वास्थ्य विभाग और जल आपूर्ति का जिम्मा पूरी तरह ठेकेदारों के जरिये रखे वरकर सम्भाल रहे हैं.... सफाई का ठेका मुम्बई की कम्पनी को। ★नोएडा की औद्योगिक इकाइयों में कार्यरत श्रमिकों का जम कर शोषण किया जा रहा है।

— दीवारों और पोस्टरों तक ही सीमित रह गये हैं नियम। खतरनाक उद्योगों में भी कम नहीं है बालश्रम..... 1986 में सरकार ने कानून द्वारा 58 कार्यों पर रोक लगाई। बीस लाख की आबादी वाले गाजियाबाद महानगर में आये दिन नियमों की धज्जियाँ उड़ाना आम हो गया है। कम खर्चे में अधिक लाभ देने वाली यह छोटू नाम की मशीन औद्योगिक विकास के नाम पर खुद को प्रणेता मानने वाले गाजियाबाद की पहचान बनता जा रहा है।

(दिल्ली से हाल ही में शुरू किये गये दैनिक "आज समाज", 276 ग्राउण्ड फ्लोर, कैप्टन गौड़ मार्ग, श्रीनिवासपुरी, नई दिल्ली—110065, के 'कामगार समाज' पन्ने में उपरोक्त बातें हैं।)

बन्दी वाणी (13)

सम्पूर्ण संसार बन्दीगृह बन गया है। सरकारों के कारागारों में बन्द हमारे बन्धुओं पर तो जकड़ और भी अधिक है। यहाँ कैदियों से हमारा कोई सम्पर्क नहीं है — जेलों में बन्द लोगों की वाणी के प्रसार में कृपया सहायता करें। इधर 2 जनवरी के गैरी हालफोर्ड के जेल से हमें लिखे पत्र के अंश यहाँ दे रहे हैं। कैदी को पत्र लिखना कालकोठरी में दरारें डालना है।

GARY HALLFORD, T-58516, FOLSOM STATE PRISON, 1B-2B-31L,
P.O. BOX 715071, REPRESA, CA 95671-5071, U.S.A.

"नियम-कानून जरूरी हैं!" जबकि एक भुक्तभोगी की यह दास्तान नियम-कानून के टेढे-मेढे हो कर दोहरेपन की अर्थहीन दलदल बनने का बयान करती है। नियम-कानून की बची-खुची वैधता को बेनकाब करती बात यह है:

कल (1 जनवरी को) फोलसम जेल में बन्द अफ्रीकी मूल के कुछ अमरीकी नागरिकों में फुटबाल के मैचों पर शर्त या ऐसी ही किसी छोटी-सी बकवास पर मामूली-सी खटपट हुई। अधिकारियों ने इस पर फोलसम जेल के सब बन्दियों को, चार हजार कैदियों को कालकोठरियों में बन्द कर दिया है! दवा जैसी चीजें भी रोक दी हैं!! और, अधिकारियों को "खतरनाक ड्युटी" के लिये अतिरिक्त पैसे मिलेंगे।

अमरीका सरकार के जिन श्रेष्ठ संवैधानिक अधिकारों की बातें की जाती हैं उनका अस्तित्व ही नहीं है अमरीका सरकार की जेलों में। न्यायालय जेल अधिकारियों को कठघरे में खड़े नहीं करेंगे इसलिये कारागारों में अजूबे न्याय का मूल सूत्र है: "हर मामले में कैदी दोषी हैं जब तक कि निर्दोष सिद्ध न हो जायें।"

अमरीका सरकार के विशाल जेलतन्त्र में बन्दियों के बीच हिंसा को नियम-कानून तीन खानों में रखते हैं: छुटपुट, नस्ली, दँगा। दो कैदियों के झगड़े में गम्भीर चोट नहीं लगी हो तो वह छुटपुट के दायरे में रखा जाता है। अगर खटपट अलग रंग-नस्ल के दो बन्दियों के बीच हो तो उसे नस्ली समस्या के खाने में रख कर उन रंगों-नस्लों के सब कैदियों को कालकोठरियों में बन्द कर दिया जाता है। और, तीन लोग हों तो दँगा! थोड़े-से लोग एक-दूसरे पर चिल्ला रहे हों, धक्का दे रहे हों तो अधिकारी उसे दँगा करार दे कर जेल के सब बन्दियों को कालकोठरियों में बन्द कर देते हैं। हिंसा रोकने, हिंसा कम करने के दावे करते नियम-कानून वास्तव में हिंसा बढाने का काम करते हैं। इस मामुली-से मामले में 1 जनवरी से अतिरिक्त बन्धन झेल रहे हम 4000 कैदियों में से अधिकतर का इस मामले से कोई लेना-देना नहीं है। फिर भी कईयों को इस मामले में अन्य सजायें भी दी जायेंगी।

सरकार एक नशेड़ी की तरह व्यवहार करती है। अधिक, और अधिक दमन सरकार के चरित्र में है। इस दुखदायी प्रहसन का विरोध कैसे करें? (जारी)

गुड़गाँव से -

लौगवेल फोर्ज मजदूर : "प्लॉट 116 उद्योग विहार फेज-1 स्थित फैक्ट्री में 20-25 प्रतिशत मजदूर स्थाई हैं और बाकी सब कैजुअल वरकर हैं। कैजुअलों में आई टी आई कियों की तनखा भी 3510 रुपये ही। दो शिफ्ट हैं 12-12 घण्टे की। ओवर टाइम का भुगतान सब को ही सिंगल रेट से और हर महीने कैजुअलों के पैसों में 300-400 रुपये की गडबड़ी। इधर स्थाई मजदूरों में किसी को भी बोनस में 2500 रुपये से ज्यादा नहीं दिये। फोरजिंग की फैक्ट्री होने के कारण प्रदूषण ज्यादा है और कम्पनी ने धुँआ निकासी की उचित व्यवस्था नही की है। मजदूरों की मेडिकल जाँच भी नहीं करवाई जाती। ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे सब की तनखा से काटते हैं पर आधे से ज्यादा मजदूरों को ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। छोड़ने पर फण्ड निकालने का फार्म भरने के लिये चक्कर कटवाते हैं। और, दो वृद्धों के जरिये कम्पनी गुण्डागर्दी करवाती है।"

सेक्युरिटी गार्ड : "उद्योग विहार फेज-1 में प्लॉट 152-3 व 210, फेज-3 में 323, फेज-4 में 224 तथा फेज-5 में 540 स्थित **सरगम एक्सपोर्ट** कम्पनी की फैक्ट्रियों में हम 25 गार्ड **स्विफ्ट सेक्युरिटी** के जरिये रखे गये हैं। हमें 12-12 घण्टे की दो शिफ्टों में बिना किसी साप्ताहिक अवकाश के ड्युटी करनी पड़ती है। महीने के तीसों दिन रोज 12 घण्टे के बदले में 4450 रुपये देते हैं। ई.एस.आई. व पी.एफ. के पैसे काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते, पी.एफ. नम्बर नहीं बताते और छोड़ने पर फण्ड निकालने का फार्म नहीं भरते। दिसम्बर की तनखा हमें 17 जनवरी को जा कर दी।"

(बाकी पेज तीन पर)

ग्राफ्टी एक्सपोर्ट वरकर : "प्लॉट 377 उद्योग विहार फेज-2 स्थित फैक्ट्री में काम करते 300 सिलाई कारीगरों की ई.एस.आई. नहीं, पी.एफ. नहीं और 14-16 रुपये प्रति घण्टा के हिसाब से पैसे। हैल्परों को सुबह 9½ से रात 8 तक काम के, रोज 10½ घण्टे पर महीने के 3510 रुपये।"

गुलाटी एक्सपोर्ट मजदूर : "प्लॉट 397 उद्योग विहार फेज-3 स्थित फैक्ट्री में रोज सुबह 9½ से रात 8 की ड्युटी तो है ही, सप्ताह में 3-4 बार रात 2 बजे तक रोकते हैं। ओवर टाइम के पैसे सिंगल रेट से। जबरन रोकते हैं, रात 2 बजे तक रोकने पर रोटी के 25 रुपये देते हैं। ठेकेदारों के जरिये रखे वरकरों में हैल्परों की तनखा 2400 तथा कारीगरों की 3000-3200 रुपये और मात्र

रेल मजदूर

22 जनवरी को सुबह 9 बजे इलाहाबाद में उत्तर मध्य रेलवे मुख्यालय के 11 विभागों के चार हजार वरकरों ने काम आरम्भ नहीं किया। हजारों रेल मजदूर महाप्रबन्धक के कार्यालय पर एकत्र हो गये। घबरा कर साहब ने स्टेशन से यूनियन नेता को बुलाया। महाप्रबन्धक से बात कर लीडर ने भाषण दिया: "हम बात कर रहे हैं, न्याय दिलवायेंगे, काम शुरू करो"। मजदूर नहीं हटे तो नेता ने धमकाया: "काम शुरू करो नहीं तो गैरहाजिरी लग जायेगी"। नेता मुर्दाबाद-दलालों को बीच में मत आने दो-हम मजदूर खुद तय करेंगे-महाप्रबन्धक सामने आये.. ... के नारे लगने लगे और लीडर खिसक लिया।

मामला साइकिलें खड़ी करने पर एक युवा पुलिसवाले द्वारा रेल कर्मचारियों को डण्डे मारने का था। साइकिल स्टैण्ड तैयार नहीं हुआ है और महाप्रबन्धक ने इधर-उधर साइकिलें खड़ी नहीं करने देने का आदेश पुलिस को दिया था।

जान छुड़ाने के लिये बड़े साहब ने मामला एक अन्य साहब को भेजा.... रेलवे पुलिस के अनुभवी लोगों ने सहकर्मी होने की बात कही और खेद प्रकट किया..... डण्डे मारने वाले को लाइन हाजिर की सजा.... एक बजे वरकरों ने काम शुरू किया।

युवा मजदूर

न्यू एलनबरी वर्क्स मजदूर : "14/7 मथुरा रोड़ स्थित फैक्ट्री में ठेकेदारों के जरिये रखे एक हजार वरकर दिन की 12½ घण्टे और रात की 11½ घण्टे की दो शिफ्टों में काम करते हैं। रोज 12½-11½ घण्टे काम, महीने के तीसों दिन इस काम के बदले में 3510 रुपये देते हैं। बहुत गुण्डागर्दी है — मैनेजर गाली देते हैं। छूटते समय लाइन लगानी पड़ती है, धक्का-मुक्की हो जाती है और गार्ड पिटाई कर देते हैं।

"न्यू एलनबरी में ट्रक, कार, जीप, स्कूटर, मोटरसाइकिल, ट्रैक्टर के छोटे से बड़े 125 प्रकार के गियर बनते हैं — **टाटा** और **मारुति सुजुकी** मुख्य ग्राहक हैं। गर्म तेल का काम है और गर्मियों में तो बहुत-ही बुरा हाल हो जाता है। ज्यादातर मजदूर 18-22 वर्ष आयु के हैं और एक लड़के से दो मशीनें चलवाते हैं। दस-बारह लड़कों के बीच एक सीनियर ऑपरेटर देखने के लिये रहता है। मैनेजर 100 हैं, उनकी रोज 10-12 घण्टे ड्युटी रहती है।

"12 घण्टे रोज पर 30 दिन के 3510 रुपयों के संग मुफ्त में दो बार चाय-मट्ठी, एक बार चाय और बहुत-ही खराब भोजन देते हैं। स्टाफ को 25 रुपये में बढिया खाना देते हैं। श्रम विभाग के लोग कम्पनी से बहुत रिश्वत लेते हैं और पुलिस रात को खाने-पीने फैक्ट्री में आ जाती है।

"निकालते नहीं। ई.एस.आई. व पी.एफ. के नाम से पैसे काटते हैं पर ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते। नौकरी छोड़ने वाले का पी.एफ. निकालने का फार्म भरते ही नहीं — अधिकतर का फण्ड खा जाते हैं। फैक्ट्री में 8 घण्टे की ड्युटी वाले 140 स्थाई मजदूर ही बचे हैं और बाद में भर्ती किये ऐसे 250 मजदूरों को स्टाफ कहते हैं, वर्क मॉनिटर कहते हैं।"

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।
RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73-2011